इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय
Indira Gandhi National Tribal University
Inspiring Students, Empowering Society
(संसद के अधिनियम के अधीन स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by an Act of Parliament)

Prof. Shri Prakash Mani Tripathi
Vice –Chancellor

सं. इंजवि / कु. / 2020 /
दिनांक: 05.06.2020

संदेश

विश्व पर्यावरण दिवस

आप सबको 'विश्व पर्यावरण दिवस' की बधाई एवं अनन्त शुभकामनाएं। हम सभी को जीवन पर्यन्त प्रकृति–मित्र बने रहना चाहिए तथा अपने पर्यावरण को स्वच्छ, सुरक्षित और समृद्ध रखने के लिए यत्न करते रहना चाहिए। आज विश्वधरा हमारी स्वयं की असावधानी और लोभ के चलते अनेक संकटों में घिरी हुई है जिसकी चिंता संयुक्त राष्ट्र संघ को भी है जिसने पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता के लिए 1974 में 'विश्व पर्यावरण दिवस' मनाने का निर्णय लिया तथा पृथ्वी पर उत्पन्न हर प्रकार के प्रदूषण, जनसंख्या विस्फोट तथा वैश्विक ताप (Global Warming) को नियंत्रित करने का संकल्प लिया। वास्तव में पर्यावरण में वायु, जल, भूमि, पेड़–पौधे, जीव–जन्तु, मानव और उसकी विविध गतिविधियों के परिणाम आदि सभी का समावेश होता हैं।

प्रकृति हमारी सहचरी ही नहीं, वह हमारे लिए जीवन रक्षक और पोषक भी है। यह हम सभी जानते हैं कि हमारा भोजन, हमारा श्वाँस ही नहीं बल्कि हमारे लिए जल और अनुकूल ऋतुओं का प्रबंधन भी प्रकृति ही करती है। भारतीय दर्शन और चिंतन ने प्रकृति के इस देय के समक्ष अपना विनत भाव बारंबार प्रकट किया है। भारतीय दर्शन के अनुरूप पंचमहाभूत– क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर की आराधना की गई है। प्रकृति पूजा भारतीय लोक जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा रही है, और कहीं–कहीं आज भी है। पर्यावरण की केन्द्रीय अवधारणा यह है कि मनुष्य और प्रकृति एक दूसरे से न केवल गहराई से जुड़े हुए हैं, बल्कि अपनी अन्तः क्रियाओं द्वारा एक दूसरे को प्रभावित भी करते हैं। प्रकृति में सभी मनुष्यों के भरण–पोषण की अद्भुत क्षमता है और वह ऐसा सभ्यता के प्रारंभ से करती आ रही है।

भारतीय आध्यात्मिक परंपरा और पौराणिक वाङ्मय में भी प्रकृति और मनुष्य की यह एकात्म भावना विविध प्रकार से प्रकट हुई है जिसमें पर्यावरण संतुलन तथा संरक्षण के अनेक सूत्र भी कई प्रकार के प्रसंगों में प्रस्तुत किए गए हैं। भारतीय चिंतन में पर्यावरण और प्रकृति के प्रति उत्कृष्ट भावना, प्रकृति का मिथकीय रचाव और देवता के रूप में उनके प्रतिस्थापन (सूर्य, चंद्र, वरुण, वायु एवं अग्नि) पर्याप्त और प्रेरक ढंग से मिलता है। भारत के आदिवासी वन और जल के प्रति अटूट प्रेम रखते हैं। हमारे विश्वविद्यालय के आसपास बसे जनजातीय समूह –बैगा, गोंड, सहरिया आदि आज भी पशु–पक्षियों, वन–लताओं और नदी–कुंडों को अपने कर्म और धर्म का अटूट हिस्सा बनाए हुए हैं।

दुर्भाग्यवश विश्व–मानव ने प्रकृति के साथ मनुष्य के इस अनिवार्य अंतः संबंध पर स्वार्थ और लोभ के वशीभूत होकर ध्यान नहीं दिया। हमारे यहाँ धरती को माता की भांति पूजनीय कहा गया है –"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्या।" "शुक्ल यजुर्वेद" (1136–1711) के श्लोक –"ऊँ द्योः पृथ्वीः शान्तिः अंतरिक्षऽवं शान्तिः...वनस्पतयः शान्तिः...ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।" में तो यह प्रार्थना की गई है कि आकाश में संतुलन हो, पृथ्वी पर सुख और शांति हो, वनस्पतियों में वृद्धि हो, वृक्ष फलें–फूलें, पृथ्वी के समस्त प्राकृतिक उपादानों में शांति का विस्तार हो और यह शांति प्रत्येक प्राणिमात्र में स्थापित हो। यह प्रार्थना "Time for Nature" के मंत्र के रूप में विश्व–मानव ग्रहण कर सकता है और प्रकृति के दोहन की अपनी आत्मघाती प्रवृत्ति से मुक्त होने का यत्न कर सकता है। "ईशोपनिषद" में प्रकृति के साथ उचित व्यवहार करने की यह सीख भी निहित है कि "ईश्वर समस्त ब्रह्मांड का संचालन करता है, प्रकृति के समस्त अवयव उसी ईश्वर की देन हैं, इन्हें ईश्वर का प्रसाद मान कर इनका आनंद लें लेकिन निवृत्ति के भाव के साथ, इनका संहार न करें और न ही इनके प्रति लोभ पैदा होने दें, प्रकृति के दोहन के लोभ से बचें।" "प्राकृतिक संसाधन इंसान की आवश्यकताओं की तो पूर्ति कर सकता है, किन्तु उसकी लालच की पूर्ति नहीं कर सकता।" ऐसी महात्मा गांधी की मान्यता थी। पृथ्वी पर जीवन स्वच्छ, स्वस्थ और संतुलित पर्यावरण में ही संभव है।

'विश्व पर्यावरण दिवस' के अवसर पर विश्व मानवता को भारतीय चिंतन के विचारों को अपने दिनचर्या और जीवनचर्या का विषय बना लेना चाहिए। पिछले कुछ महीनों के कोविड–19 संकट से बचने के लिए किए गए लॉकडाउन से प्रदूषण कम होने से प्रकृति के सभी उपादानों में प्राण का संचार हो गया। हम यह जान लें कि पर पृथ्वी पर अस्तित्ववान समस्त प्राणियों और वनस्पतियों का अस्तित्व एक दूसरे पर निर्भर है अतः परस्पर एक–दूसरे के प्रति "अहिंसा" का भाव ही इस कठिन समय में प्रकृति और मनुष्य दोनों की रक्षा कर सकता है। इस भावना के साथ अपनी पृथ्वी को जीवनदायिनी माता के रूप में उसका नमन करें और इस बात का ध्यान करें कि माता के ऋण से मनुष्य कभी भी उऋण नहीं हो सकता।

पर्यावरण के प्रति जागरूकता सामाजिक शिक्षा से संभव है। संभवतः प्राणियों के प्रति प्रकृति की इसी उदारता को देखते हुए 'विश्व पर्यावरण दिवस–2020' का मूल विषय है–'Time for Nature' अर्थात् हम प्रकृति को भी अपना समय दें, उसके बारे में सोचें तथा अपने प्रति उसके उदार वात्सल्य को पहचानें। प्रकृति का वंदन करें।

श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी

अमरकंटक, जिला अनूपपुर, म.प्र.–484887 **Amarkantak, Dist. Anuppur, M.P.-484887**
Phone : 07629-269710 || Fax 07629 269712 || eMail : vc@igntu.ac.in || website : www.igntu.ac.in